अधिकार एवं कर्तव्य

अनुराधा सपरा,
हरिद्वार

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ जनता की सरकार हर पाँच वर्ष के लिए बनती है। जो जनता के हितों को ध्यान में रखकर देश के विकास के लिए कार्य करती है। यहाँ बिना किसी भेदभाव के सभी को वोट डालने का अधिकार है। बाबा भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में बनी समिति ने देश का संविधान लिखा था जिसके आधार पर सरकारें देश चलाती हैं। इस संविधान में संसद की अनुमति से समय-समय पर संशोधन किए जाते हैं हमारे संविधान ने देश की जनता को निम्नलिखित अधिकार दिये है:-

- समानता का अधिकार
- अभिव्यक्ति का अधिकार
- उत्पीड़न के विरोध का अधिकार
- धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार
- संस्कृति एवं शिक्षा का अधिकार
- संवैधानिक उपायों का अधिकार

परन्तु क्या कारण है कि इतना सब कुछ होने पर भी देश में अव्यवस्था फैली है, लागू की जा चुकी योजनाओं के अपेक्षित परिणाम नहीं आ रहे हैं। कृषि पर निर्भर देश का किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहा है। देश में एक तरफ गोदामों में अनाज सड़ रहा है तो दूसरी ओर लोग कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। आजादी के 60 वर्ष के बाद भी जनसंख्या का एक हिस्सा निरक्षर है। स्वच्छ जल के स्रोत दूषित हो रहे हैं, बेरोजगारी की समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल होती जा रही है। बेरोजगारी उन्मूलन के लिए मनरेगा जैसी योजनाओं के बहुत अच्छे परिणाम नहीं मिल रहे हैं। संसद में सरकारें जितनी भी योजनाएं बना रही हैं उनका लाभ लक्षित व्यक्ति को नहीं मिल पा रहा है। देश के बड़े-बड़े अधिकारियों के घरों पर सी.बी.आई. एवं आयकर विभाग के छापे पड़ रहे हैं। गरीब जनता के पैसे से कुछ लोग धन कुबेर होते जा रहे हैं।

यह सब देखकर यह चिन्तन का विषय हो जाता है कि यद्यपि हमारे देश में प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, धर्मो के प्रति पूर्ण आस्था है तथा बच्चों को बचपन से ही नैतिकता का पाठ पढ़ाना शुरू कर दिया जाता है। परन्तु क्या कारण है कि हर वर्ग को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाने पर भी उनको सही दिशा नहीं मिल पाती।

उपरोक्त सभी की गहराई में जाया जाये तो स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि आज हमें अपने अधिकारों की तो चिन्ता है परन्तु देश एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध नहीं है। हम राजधानी ट्रेन में सफर करते समय तो सारी सुविधाएं मानक के अनुसार चाहते हैं। परन्तु रेलवे की सम्पत्ति को तोड़ने एवं गंदा करने में स्वयं पर गर्व करते हैं। इसके प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में स्वयं को छोटा अनुभव करते हैं। देश एवं समाज की सारी समस्याओं के कारणों का यदि अध्ययन किया जाये तो मालूम होता है कि कर्तव्यों का पूरी तरह से निर्वहन न किया जाना भी इसका एक मुख्य कारण है।

कर्तव्यों का निर्वहन करने में मीडिया की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया नागरिकों को उनके कर्तव्य याद दिलाने के लिए प्रेरित कर सकता है। मीडिया को भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए। क्योंकि मीडिया तथ्यों एवं सूचनाओं को प्रसारित कर समाज को सही दिशा देता है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि हमें अपने अधिकारों के प्रति जितना सजग रहना जरूरी है उससे ज्यादा जरूरी है कि हम अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा से करें। हमें यह समझना चाहिए कि हमारे इन्हीं कर्तव्यों के पीछे देश और समाज का विकास छुपा है। यदि देश का हर नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी से करेगा तो देश का हर व्यक्ति सुख एवं आनन्द से अपना जीवन व्यतीत कर सकेगा तथा यह देश विकसित राष्ट्रों की सूची में प्रथम स्थान पर होगा।

मैं इस लेख को पढ़ने वाले सभी पाठकों से अनुरोध करती हूँ कि वे कर्तव्यों का निर्वहन करने में स्वयं को एवं दूसरों को प्रेरित करें। जय हिन्द !

*****

जगत में कोई नहीं परमानैन्ट

पंचराम चमोली, रूड़की

जगत में कोई नहीं, परमानैन्ट।
बाहर आकर भूल गया तू, प्रभु का एग्रीमैन्ट।
कर्मों की कसरत करते-करते, बन बैठा तू सरवैन्ट।
प्रभु नाम के बिना, तेरा कौन करे ट्रीटमैन्ट।
मोटर, बंगले, कार खरीदी, खूब किया एरेन्जमैन्ट।
मरघट घाट पे जब डेरा लगेगा, कपड़ा मिलेगा ना टैन्ट।
यमराज के दूत पकड़ ले जाएंगे, लेंगे तेरा स्टेटमैन्ट।
धर्मराज तेरी हिस्टरी सुनकर, देंगे सही जजमैन्ट।
ऐसी करनी कर चल बन्दे, कभी न हो कम्पलैन्ट।
सभी धर्मशास्त्र वेद कहते, यहाँ से जाना सौ परसैन्ट।
जगत में कोई नहीं, परमानैन्ट।

*****